21. उपनिषद् वाङ्मय में काव्यतत्त्व

● **डॉ0 योगेन्द्र कुमार सिंह**
ई.मेल- singhyogendra426@gmail.com

शोध-सार

प्रस्तुत शोध पत्र में उपनिषद् वाङ्मय में समाहित काव्यतत्त्व पर प्रकाश डाला गया है । काव्यशास्त्रियों ने काव्यशास्त्र के विभिन्न आयामों के अन्तर्गत गुण, अलङ्कार तथा रीति के हृदयावर्जक सिद्धांतों का मनोरम प्रासाद खड़ा किया है।उपनिषदों में शब्दालङ्कार अर्थालङ्कार के उदाहरण पदे - पदे उपलब्ध होता हैं। शब्दालङ्कारों में लाटानुप्रास, यमक , अर्थालङ्कारों में उपमा का विवेचन सम्यक रूप से प्राप्त होता है। शिष्य को आत्मतत्व का बोध कराने में मनीषी आचार्यों ने बहुशः उपमा का ही उदाहरण प्रस्तुत किया है । उपनिषदों में काव्य के तीन गुणों में से माधुर्य और प्रसाद का विधिवत् विवेचन प्राप्त होता है जो परवर्ती कवि परम्परा के लिए उपजीव्य का कार्य किए हैं। इसी प्रकार जिसे वामन ने काव्य की आत्मा घोषित किया उन चार प्रकार की रीतियों में से वैदर्भी के लालित्यपूर्ण उदाहरण पुष्कलरुपेण उपनिषदों में प्राप्त होते हैं। आचार्य आनन्दवर्धन द्वारा जिस ध्वनि मार्ग की प्रस्थापना काव्य मार्ग में की गई उसका भी वर्णन प्ररोह रूप में उपनिषदों में प्राप्त होता है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध पत्र में काव्य के विभिन्न तत्त्वों का विवेचन किया गया है जो पूर्णतः मौलिक है।

मुख्य शब्द- *उपनिषद्, काव्यतत्त्व*

वैदिक वाङ्मय में अपरिमित ज्ञान-राशि सञ्चित है। इसमें कोई संदेह नहीं कि इस अपौरुषेय ग्रन्थ को सृष्टि का अमर काव्य होने का गौरव प्राप्त है। इस वाङ्मय में सौन्दर्यपक्ष उतना ही सबल है जितना सत्य और शिव पक्ष। वैदिक वाङ्मय की विपुल ज्ञान राशि का उत्स वेदों में सञ्चित किया गया है।

उपनिषदों में ऋषियों के दार्शनिक चिन्तन का मात्र समावेशन ही नहीं प्रत्युत अभिव्यक्ति की कलात्मक निदर्शना पदे-पदे उपलब्ध है। उपनिषद् के प्रवचनकर्ताओं ने अपने दर्शन एवं चिन्तन को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए प्रायः काव्यात्मक साधनों का प्रयोग किया है। जब वेद ही नहीं अपितु अखिल सृष्टि भी ईश्वर का प्राण है ऐसी स्थिति में सृष्टि के गूढ़तम रहस्यों का उद्घाटन करने वाले उपनिषद् काव्यतत्त्व से शून्य कैसे रह सकते हैं। नाट्यशास्त्र के प्रणेता आचार्य भरत ने रूपकों के सभी अङ्गो का आविर्भाव वेदों से माना है। राजशेखर ने साहित्य को पञ्चम विद्या मानते हुए उसे चारों वेदों का निष्यंद माना है।

उपनिषद् साहित्य- इन्हें वेदों का ज्ञानकाण्ड कहा जाता है। उपनिषदों का अध्ययन गुरु-परम्परा द्वारा एकांत में होता था इसलिए इन्हें 'रहस्य विद्या' भी कहा गया। उपनिषदें आध्यात्मिक प्रकाश के वे उपस्कर हैं जिससे सत्य का दिव्य दर्शन होता है।

'उप' तथा 'नि' उपसर्गपूर्वक 'सद्' धातु से 'क्विप्' प्रत्यय करने पर उपनिषद् शब्द बनता है।[1] जिसका सामान्य अर्थ है 'गुरु के समीप बैठकर अर्जित किया गया ज्ञान।' सद् धातु के तीन अन्य अर्थ हैं- विशरण (नाश), गति (ज्ञान या प्राप्ति), अवसादन (शिथिल करना)। उपनिषदों की सङ्ख्या 108 से 200 तक मानी जाती है। इनमें से 11 प्रमुख मानी गयी हैं और इन्हीं पर शङ्कराचार्य जी का भाष्य भी उपलब्ध है। (1) ईश, (2) केन, (3) कठ, (4) प्रश्न, (5) मुण्डक, (6) माण्डूक्य, (7) तैत्तिरीय, (8) ऐतरेय, (9) छान्दोग्य, (10) बृहदारण्यक, (11) श्वेताश्वतरोपनिषद्।

काव्यशास्त्रियों के मन में काव्यशास्त्र के विभिन्न आयाम इसलिए प्रसूत हुए क्योंकि उन्होंने वेदों, उपनिषदों तथा आर्षकाव्यों का सम्यक अध्ययन किया तथा उन्हीं आधारों पर अलंकार, गुण, रीति के हृदयावर्जक सिद्धान्तों का मनोरम प्रासाद खड़ा किया। काव्य का सौन्दर्य उषा के समान वैदिक वाङ्मय से निःसृत हुआ।

वेदों एवं उपनिषद् वाङ्मय के मंत्र उत्कृष्ट काव्य के उदाहरण हैं। उपनिषत्कार ने दर्शन एवं साहित्य का मंजुल सन्निवेश किया है। उपनिषदों में कमनीय कल्पना, मनोरम शब्दार्थ विन्यास तथा रस, गुण, रीति, ध्वनि, अलंकार का प्रचुर दर्शन उपलब्ध होता है। 'रसो वै सः' का संदेश यह बोध कराता है कि साहित्य की अमरता का संदेश आनन्द की खोज है।

वेदों में शब्दालङ्कार, अर्थालङ्कार, गुण, रीति इत्यादि यत्र-तत्र उपलब्ध होते हैं वही परम्परा उपनिषदों में भी मिलती है।

अलङ्कार- उपनिषद् में अनुप्रास पुष्कल रूप से मिलता है जैसे-

यस्मिन् सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजिगुप्सते।।[2]

यह उदाहरण वृत्त्यनुप्रास का है। लाटानुप्रास का दृष्टांत-

नाहं मन्ये सुवेदेति नो न वेदेति वेद च।
यो नस्तद्वेद नो न वेदेति वेद च।।[3]

यहाँ पर शब्द और अर्थ की पुनरुक्ति होने पर अन्वय मात्र से तात्पर्य में भेद हुआ है जो लाटानुप्रास का उदाहरण है।

यमक अलङ्कार -

विद्यां चाविद्या च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते।।[4]

इसी प्रकार उपनिषदों में उपमा **'अरा इव रथनाभौ कला यस्मिन्प्रतिष्ठिताः।**[5]' तथा रूपक **'पुरुष एवेदं विश्वं कर्म तपो ब्रह्म परामृतम्।**[6]' जैसे विभिन्न अलङ्कार उपनिषदों को अलङ्कृत कर रहे हैं।

गुण- इन्हें रस का अङ्गी धर्म माना गया है जैसे- शौर्य आदि गुण आत्मवत् होते हैं इनकी सङ्ख्या और स्वरूप काव्यजगत् में विभिन्न रूपों में हैं। गुणों का बीज वपन तो वेदों में ही हो गया था परन्तु उपनिषदों में त्रिविध काव्य गुण भी उसकी सारवत्ता को चारुतर बनाए हैं।

माधुर्य गुण-

तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः।।[7]

ओज गुण-

तं स्वाच्छरीरात्प्रवृहेन्मुंजादिवेषीकां धैर्येण।[8]

प्रसाद-

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।[9]

रीति- आचार्य विश्वनाथ चार प्रकार की रीतियाँ मानते हैं। उपनिषदों में वैदर्भी आदि चारों रीतियाँ द्रष्टव्य हैं- **"यन्मनसा न मनुते येनाहुर्मनो मतम्"** (वैदर्भी) तथा **"स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं....."**(गौडी) तथा **"यथोर्णनाभिः सृजते गृह्य च....."**(पांचाली)।

ध्वनि- आनन्दवर्धन द्वारा जिसे 'काव्यस्यात्मा' कहा गया वह काव्यपरक दृष्टिकोण से विचार करने पर उपनिषदों में पुष्कल रूपेण विद्यमान है।

ध्वनि के भेदों तथा उपभेदों का निरूपण कठ, केन, ईश तथा मुण्डक इत्यादि उपनिषदों में पाया जाता है।

लक्षणामूलक अर्थान्तर संक्रमित वाच्य ध्वनि-

न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः लप्स्यामहे वित्तमद्राक्ष्य चेत्त्वा।।[10]

इसी प्रकार अभिधामूलक अर्थशक्ति मूलध्वनि-

अन्धतमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते..।[11]

इसी प्रकार पदध्वनि इत्यादि भेद-प्रभेद वेदान्त में भरे पड़े हैं।

रस परिपाक- '**रसौ वै सः। रस एवायं लब्ध्वानन्दी भवति।**'[12] का निरूपण परवर्ती काव्यविदों के लिए प्राणतत्त्व बना। उपनिषदों में शान्त रस सर्वाधिक पाया जाता है- याज्ञवल्क्य-मैत्रेयी सम्वाद में शान्त रस पाया जाता है। केनोपनिषद् में अद्भुत रस-

केनेषितं पतति प्रेषितं मनः, केन प्राणः प्रथमः प्रैतियुक्तः।

गद्य स्वरूप- गद्य के त्रिविध सामासिक भेद चूर्णक, वृत्तिगंधि तथा उत्कलिका प्राय उपनिषदों में विकीर्ण रूप से विद्यमान हैं। चूर्णक गद्य (अल्प समास या समास रहित) प्रश्नोपनिषद् तथा बृहदारण्यक एवं तैत्तिरीयोपनिषद् में भरा पड़ा है। इसी प्रकार वृत्तिगंधि (पद्यात्मक) जैसे-

स यथा सोम्य वंयासि वृक्षं संप्रतिष्ठन्ते.....।[13]

तथा उत्कलिकाप्राय गद्य (उत्कट पदयुक्त)- **नान्तः प्रज्ञं न बहिः प्रज्ञं नोभयतः.....।**[14] में है।

इस प्रकार उपनिषदों में उपर्युक्त काव्यतŸवों के अतिरिक्त चारों महावाक्यों में शब्द शक्तियों पर पर्याप्त प्रकाश काव्यशास्त्र के विज्ञ जनों द्वारा डाला गया है।

अस्तु 'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्' की पवित्र उद्घोषणा के साथ-साथ यह तथ्य भी सामने आता है कि सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय उच्चकोटि का साहित्य ग्रन्थ है। वैदिक वाङ्मय में भी उपनिषद् ने अपने दार्शनिक बोध में काव्य की प्रभुसम्मित शैली के साथ कहीं न कहीं अपनी 'कान्ता सम्मितशैली' से काले-काले युग प्रबोधन किया है।

सन्दर्भ सूची

ईशावास्योपनिषद्, 5
कठोपनिषद्, 6/17
ईशावास्योपनिषद्,
कठोपनिषद्, 1.27
ईशावास्योपनिषद्,
ईशावास्योपनिषद्, 6
केनोपनिषद् ,2/2
ईशावास्योपनिषद् ,मंत्र11
प्रश्नोपनिषद् , 6/6
द्वितीय मुण्डक /10
संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास,कपिलदेव द्विवेदी
तैत्तिरीयोपनिषद्,ब्रह्मानन्द वल्ली,
प्रश्नोपनिषद्, 4.7
माण्डूक्योपनिषद्, 7

****